IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमाचाल प्रदेश की गद्दी जनजाति की हस्तशिल्प विरासत

1Manjeet Singh, 2Aman Kumar
1MPHIL, 2MPHIL
1Central University of Himachal Pradesh,
2Central University of Himachal Pradesh

1 प्रस्तुत :

हिमाचल प्रदेश के वनवासी लोग जंगलों और पहाड़ों में काफी समय से रह रहे हैं | और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। | गद्दी जनजाति ...लोगों .उनकी विशिष्ट पोशाक टोपी चोला और डोरा के रूप से पहचानी जाती है| और उन्हें गद्दी जनजाति चंबा जिले के भरमौर क्षेत्र की अर्ध-कृषि जनजाति भी कहा जाता है| गद्दी समुदाय के लोग अपने हाथ में एक हुक्का और नरयल का प्रयोग (धूम्रपान)करने के लिए अपने साथ रखते है और खाने पीने युक्त अनाज और अन्य आवश्यक की वस्तुएं अपने साथ रखते हैं और कठिन स्थलाकृति और कठोर जलवायु के कारण गद्दी समुदाय लोगों ने अपनी अनूठी हस्तशिल्प विकसित कर रहे है जो अभी भी है निर्मित और उपयोग भी हिमाचल प्रदेश में किया जाता है। और उनकी वेशभूषा आभूषण और दस्तावेजी करने का प्रयास किया गया है हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति द्वारा उपयोग किए जाने वाले विभिन्न बुने हुए और अन्य हस्तशिल्प उत्पाद किया जा रहे है और यह गद्दी समुदाय को अन्य समाज के साथ जोड़ रहे है

2 कीवर्ड: गद्दी ,जनजाति, वनवासी ,गहने ,पारंपरिक ,हस्तशिल्प

1.1. वनवासी समुदाय

स्थान के आधार पर भारत में प्राचीन काल से रहने वाले लोगों को तीन समूह में रखा जा सकता है। ग्राम में रहने वाले लोग 'ग्रामवासी', नगर में रहने वाले 'नगरवासी', और वन में रहने वाले 'वनवासी'। महात्मा गाँधी ने वनवासियों को 'गिरिजन' अर्थात पहाड़ों पर रहने वाले लोग कह कर पुकारा है। भारतीय संविधान में वनवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' पद का उपयोग किया गया है (पुखराज, 1986)। अनुसूचित जनजातियाँ देश भर में मुख्यतया वनों और पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते हैं ।

वनवासी समुदाय जनजाति शब्द का अर्थ

जनजाति शब्द 'जन' और 'जाति'दो शब्दो से मिलकर बना है| जिसमें 'जन'का अर्थ- लोग तथा 'जाति' शब्द 'किसी समूह' को दर्शाता है। अत: लोगो का ऐसा समूह जिनकी अपनी सांस्कृतिक विशेषता है और जिनका संबंध एक समान बोली और एक क्षेत्र से हैं| जनजाति के संदर्भ में कहा जा सकता है कि यह एक क्षेत्रीय मानव समूह है जिसके भू-भाग, भाषा, सामजिक नियम और आर्थिक कार्य आदि विषयों में समानता दिखाई देती है (शर्मा, 2005)। समय-समय पर विद्वानों ने जनजाति की परिभाषित करने का प्रयास किया है।

हिमाचल प्रदेश में वनवासी समुदाय

गद्दी सभी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सामान्य शब्द है

हिमाचल प्रदेश में धोलाधार श्रेणी व घाटी के क्षेत्र को अनुसूचित जनजातियो का मुख्य निवासा स्थान है। *गद्दी* शब्द का प्रयोग उनकी जनसख्या तथा जन्मभूमि से प्राप्त हुआ हैं। उदाहरण में हम कहा सकते है की जब शिव महादेव भरमौर में 84 देवी देवतओ के साथ जो भरमोर में निवास करते थे। वह पर जो महादेव शिव बैठने के लिए जिसे गिद्दी का प्रयोग करते थे। और जब शिव महादेव भरमौर के स्थान को छोडकर मणिमहेश पर्वत के लिए चले गया तो । वह पर उनके जो बैठने का स्थान था। उसे गिद्दी को वही छोड़कर चले गये थे। और गद्दी के कारण से वह के निवासीयों को गद्दी के नाम से जाना जाता है।

तभी तो वह के निवासी को गद्दी शब्द उनकी जन्मभूमि से प्राप्त हुआ है।(अमर सिंह रनपतिया 2009) जिसे ' *गदेरन*' शब्द कहा जाता है। कुछ का मानना है कि 'गद्दी' जनजाति चंबा के भरमौर क्षेत्र में रहने वाली आबादी के लिए प्रयोग किया जाता हैं।(अनूप, 2013)

जनजाति को अनुसूचित जनजाति घोषित किया है। संस्कृत में मिले - जुले शब्द' *गदेरन*' का अर्थ हुआ भेड़ और गाडरी भेड़ पालक हुआ। अर्थात् भेड़ को पालने वाला भेड़ पालक जिसे गद्दी कहा गया। दूसरे शब्दों में गदेरन में रहने वाला व्यक्ति गद्दी हुआ। गदेरन शब्द का प्रयोग कई स्थानों पर पुराणों और महाभारत में आया है और विद्वान इस शब्द को चंबा वादी के लिए प्रयुक्त करते हैं। गद्दी लोग भरमौर और उससे सलगन

क्षेत्र को गदेरन की संज्ञा से पुकारते हैं । अतः स्पष्ट है गदेरन में निवास करने वाले लोग गद्दी हैं। हैं (रणपतिया, 2010)

गद्दी समुदाय के लोगों तीन शब्दों का इस्तेमाल किया उनका वर्णन करने के लिए ईमानदार, सरल और मेहनती (पटनाइक और सिंह, 2005)

भरमौर क्षेत्र की शिव की आबादी का क्षेत्र भी कहा जाता है । भरमौर क्षेत्र की ऊंचाई पर स्थित है 2,133.6 मीटर (32' 26" और 76" 32" ई), चंबा के दक्षिण-पूर्व में 64.37 मीटर। भरमौर न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है वहा गद्दी जनजाति का प्राचीन शिव का मंदिर भी वह पर है । इन क्षेत्र यह इलाकों में रहने वाले गद्दी जनजाति भरमौर के मौसम गद्दी अर्ध- कृषि जनजाति और भेड़ों के बकरियां बड़े झुंड के मालिक भी कहा जाता हैं और जो उनके आय और धन का मुख्य स्रोत हैं। कृषि खेती बड़ी और चरवाहे है वह उनकी आय का मुख्य स्रोतों के अर्तगत आते है

पारंपरिक परिधान और उनके गहने।

1 पोशाक

पोशाक गद्दी जनजाति को उनके पहनावे से पहचाना जा सकता है क्योंकि इसमें पुरुषों के लिए चोला डोरा टोपी और शोल शामिल हैंमहिलाओं के लिए लुआंचारी, डोरा और लंबा दुपट्टा। गद्दी की पोशाक तुलना में काफी अलग है अन्य क्षेत्रों की भांति गद्दी अपनी अलग सांकृतिक पहचान रखते है1गद्दी पारंपरिक तो पर अपनी संस्कृति और रहन सहन मैं विशेष पहचान रखते हैं ये गद्दी जनजाति के द्वारा हाथ से उत्पन्न की गयी वस्तुओं जिन्हें की गद्दी समुदाय मैं पट्टू और हाथो से कटा गया कोट जो की समुदाय मैं काफी लोकप्रिय माना जाता है जैसे उदाहरण के लिए गया है

2 डोरा,

डोरा भेड़ के ऊन से बनी एक डोर कहलाती है, जो 60 मीटर लंबी होती हैजो की इस समुदाय मैं बहुत लोक प्रिय है इस का उपयोग गद्दी जनजाति के लोग जैसे की पुरुष डोर का उपयोग अपनी कमर पर कोट को बंधने के लिए करते हैं और महिलाएं इसका उपयोग अपनी चोली को करती हैं जो की इस संस्कृति की एक महत्वपूर्णडोर की भूमिका अदा करती है ये गद्दी जनजाति का एक परम्परायिक विरासत के अंतर्गत आता हैं जो कि भेड़ की काली ऊँन से बनाया जाता है जो कि।

3 लुआंचारी

लुआंचारी का एक स्वरूप जो कि गद्दी समुदाय कि लड़कियों कि शादियों मैं महत्व भूमिका निभाती है जो कि रंग बिरंगे कपड़ों से बनायीं जाती है जो कि समुदाय की एक संस्कृति को दर्शाती है जोकि दर्शायी

गद्दी जनजाति की महिलाओं का प्राचीन पहनावा है

1 चिड़ि

चिड़ि को माथे पर पहना जाता है जोकि ।मैं दर्शाया गया है यह काफी हद तक भरी होती है जो की लगभग 240 – 280 ग्राम होती है इसे एक महत्वपूर्ण आभूषण माना जाता है यह गद्दी समुदाय की एक महिला के आवश्यक आभूषण है ।

2 झुमका

. झुमका गद्दी समुदाय की महिलाओं मैं विशेष रूप से पहना जाता है जो की सोने और चांदी जैसी धातु से बनी होती है इसमें विशेष बात यह है की महिलाएं अपने कानों मै सत्त्ध अतध श्रीख्लाओं मैं पहनती हैं परन्तु दुःख की बात यह है की वर्तमान मैं यह प्रचलन कम होता जा रहा है जो की । प्रत्येक झुमका इसका वजन 15-20 ग्राम है और इसका आकार भिन्न हो सकता है।

3 पपायल

पपायल का पहनावा विशेष अवसर पर किया जाता जो की शादी और अन्य जनजातीय त्यौहार एवम विशेष कार्यक्रमों मैं पहनी जाती है यदि बात करें हम गद्दी समुदाय की तो इसका विशेष प्रचालन है ये विशेष रूप मैं गद्दी जनजाति की विवाहित महिला ही उपयोग करती है इसकी चौड़ाई 5-10 सेमी और इसका वजन 300-500 ग्राम से भिन्न हो सकता है।

4 कोका

यह छोटी सी है जो कि सोने से बनी घुड़ी होती है इसके छोटा सा चमकता नग थेवा लगा होता है जिसे एक खोखली पिन से जोड़ा गया है इस के अन्दर से एक और पिन लगाई जाती है इसे तिल्तु भी कहा जाता है वर्तमान समय मैं गद्दी जनजाति मैं इसका प्रचलिने बहुत ज्यादा होता है

5 फुल्ली

यह तिल्ली अथवा कोका की तरह नाक का आभूषण होता है यह बीच मैं नग के साथ सितारे के आकार में होता है यह पाच तथा सात नग की भी होती है और वर्तमान समय मैं समुदाय मैं भी इसका सवसे अधिक प्रयोग किया जाया रहा है

6 लोंग

यह सोने से जाड हुआ नाक का गहना है इसे यह नाम मसाले वाले लोंग से मिला है इसका प्रयोग गद्दी जनजाति मैं प्राचीन समय मैं किया बहुत ही ज्याद ओत वर्तमान समय मैं भाई अधिक किया जाता है

7 चाक

यह चाक चांदी अथवा सोने का यह गद्दी जनजाति की विवहिका महिलाओं दुवारा अपने सिर पर वालो में बाधा जाता है यह समुदाय की रीति रिवाजो मैं सबसे अधिक प्रचलन मैं आता है

8 मीना

यह चांदी का होता है यह से बना बड़े आकार का हार है इस पर कार्य करती है। इसे शादियों में पहना जाता है और इसका वजन लगभग 300-600 ग्राम होता है। यह समुदाय की एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है

9 गोज्रु गोजरू

कंगन हैं और जोड़े में दिए गए हैं यह गद्दी जनजाति की एक महत्वपूर्ण भूमिका का मैं देखने मैं प्रोयाग किया जाता है यह ये वजन में 100-120 ग्राम और संकरे इंच के होते हैं और गोजरू की तुलना में फ्लैट ब्रेसलेट में भी कि जाती है भी हैं।

10 बेनी

चाक यह आकार में गोल होता है और बाद में पट्टिका के ऊपर तय होता है बालों को ठीक से कंघी करना। एक लूप और दो तार हैं वहां जो बेनी चक को ठीक करने में सहायक होते हैं। य 50 ग्राम तक वजन।

11 फुल्ल

ये पैर की उंगलियों पर पहनने के लिए हैं। ये अलग-अलग आकार और डिजाइन के होते हैं। यद्यपि ये ज्यादातर महिलाओं द्वारा पहने जाते हैं, लेकिन नव के लिए विवाहित यह अनिवार्य है।

12 दुरू

दुर पुरुषों द्वारा पहने जाने वाले सोने के कान के छल्ले हैं। परंपरागत रूप से, दूल्हे के लिए दुर अट पहनना अनिवार्य था शादी का समय।

13 फुलि

फुली बड़े आकार की नोज पिन होती है, जो से बनी होती है सोना। इसका वजन 3 ग्राम तक होता है। यह आकार में गोल होता है और आम तौर पर लाल रंग का पत्थर के बीच में रखा जाता है फुली इसे विवाहित का प्रतीक भी माना जाता है महिला (सुहाग)।

14 बालू

बालू एक बड़े आकार की नाक की अंगूठी है। यह सोने से बना है और वजन 150-200 ग्राम है। परंपरागत रूप से, सभी गहने गद्दी मैन्युअल रूप से बनाई गई थी, लेकिन अब यह वर्तमान समय के साथ काफी बदलवा हुए है इसमे और और आज के समय मैं इनको मशीन में तरह हो रहे है ।

15 हस्तशिल्प सामग्री का उपयोग समुदाय समाज में किया जाता है वह इसे तरह से वह भिन्न भिन्न विधिओ का नीचें वर्णों किया गया है

हस्तशिल्प को सरल शब्द मैं कहा तो जो प्राचीन समय मैं हाथ से बनी गयी वस्तु को हम हस्तशिल्प के अतर्गत रखते है एक आधार से जो की समुदाय की विशेषताओ को एक संस्करण के रुप मैं व्याख्या करते है एक सांस्कृतिक के रूप मैं उनमें से कुछ परिवार अर्ध-कृषि गतिविधियों में लगे हुए होतो हैं जैसे गाय, भेड़, बकरी, भैंस आदि का पालन करना और छोटे-छोटे खेतों की जुताई जो इनका स्रोत हैं भरण-पोषण कृषि, पशुपालन और व्यापार जनजातियों सामज का मुख्य व्यवसाय हैं। और समुदाय के लोग अपने कार्य को पूरा करने के लिए वे अपनी पीठ पर अधिकाश वस्तुओं को पीठ बड़ा भार ढोते हैं जिसमें बिस्तर और उनके उपयोग की अन्य चीजें, जिन्हें खार्ची कहा जाता है। भेड़ और बकरी को उन्य संपत्ति माननी जाती है। गद्दी समुदाय के लोग भड़े बकरी का प्रयोग इसका मांस और दूध

उपभोग के लिए उपयोग किया जाता है जो की उनकी सम्पति का मुख्या अग के अतर्गत आते है तथा ऊन का प्रयोग वह अपने हस्तशिल्प के लिए करते है और ऊन का उपयोग विभिन्न ऊनी वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।तथा खारची और त्वचा का उपयोग किया जाता है उत्पाद । पुरुषों की अनुपस्थिति के दौरान; महिलाएं हैं के लिए ऊनी लेख तैयार करने में व्यस्त भेड़ की ऊन से परिवार।

सबसे पहले ऊन के रेशे अलग-अलग लंबाई के रूप में हल किया जाता है बनाने के लिए उपयोग किया जाता है विभिन्न लेख। उसके बाद इसे धोकर साफ किया जाता है और कंघी की कंघी की हुई ऊन को किसकी सहायता से काता जाता है।

15 चरखा,

चरखा का प्रयोग किया जाता है जो कि और कपड़ा हथकरघा पर बुना जाता है जिसे चरखा कहा जाता है बुने हुए ऊनी लेख किया जाता है

कम्बल

गार्डु गार्डू, एक कंबल, जिसमें काला और सफेद होता है वैकल्पिक रूप से बने वर्ग दाचा की एक विशेषता है। गद्दी समुदाय । ४५ x ६० वर्ग मीटर का कपड़ा चौड़ाई, जिसे पट्टी कहते हैं, बनाई जाती है और फिर दो टुकड़े किए जाते हैं इसे व्यापक बनाने के लिए एकजुट हुए। इसकी लंबाई है लगभग 5 से 5.5 मीटर और चौड़ाई 1 से 1.25 मीटर है। गार्डस का कब्ज़ा स्टेटस सिंबल माना जाता है गद्दी परिवार की। गार्डू को इतना गर्म माना जाता है कि यह गद्दी चरवाहों को बर्फ और दोनों से बचाता है वर्षा।

(ii) गार्डी

गार्डी आकार में छोटे और वजन का एक कंबल है गार्डू से हल्का यह भी हो रहा है ढाचा के जैसा है लेकिन आकार में छोटा है।

(iii) दोढी

दोढी यह आम तौर पर एक रंग का होता है। यानी सफेद याग्रे यह आकार में लगभग बराबर है और इसका वजन के बराबर है गार्डू इसे रंगीन धागों से सजाया जा सकता है।

4 पट्टी

पट्टी यह गद्दी समुदाय के दूबार भड़े की ऊन से एक रंग में बुना हुआ कपड़ा है, यानी ऑफ- सफेद या काला और चौड़ाई में संकरा होता है, यानी 45 x 60 मी चौड़ा और लंबाई लगभग 5-6 मीटर है। यह है आमतौर पर कोट, चोलू (जेंट्स अपर) बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है पोशाक), सुथन (पुरुषों की निचली पोशाक), कुर्ती, टोपी (टोपी), आदि।

4 शॉल

शॉल नर और मादा दोनों के लिए बुने जाते हैं लेकिन उल्लेखनीय अंतर हैं। के लिए बनाई गई शॉल

नर एक रंग के होते हैं और काले और सफेद चेक में होते हैंlजबकि महिलाओं के शॉल बहुरंगी में बुने जाते हैं

डिजाइन। नर शॉल आकार में बड़े, भारी होते हैं वजन के साथ-साथ बनावट में खुरदरापन की तुलना में

महिला की शॉल। महिला शॉल का आकार 2.5 X 1 . है मी, जबकि नर शॉल लगभग 3X 1.5 मी है।

5 थालचो

थालचो बकरी के बालों से बनी एक जटिल रस्सी है। यह आमतौर पर 8-10 मीटर लंबा होता है। ये हैं भार या सूखे ऊनी कपड़े ले जाने के लिए उपयोग किया जाता है। बकरा बालों को पहले काता जाता है और फिर थाल बनाने के लिए बुना जाता है। एक छोर पर लूप का प्रावधान भी रखा जाता है ताकि लोड को ठीक से बांधा जा सकता है और ले जाया जा सकता है

6 खलरीक

खलरीक (अर्थात् त्वचा) किसकी त्वचा से बना एक थैला हैl भेड़ या बकरी भेड़ की पूरी खाल होती है हटा दिया जाता है, सूख जाता है और बाल हटा दिए जाते हैं, उद्घाटन होते हैं एक बैग बनाने के लिए सिलाई। इसका उपयोग आटा रखने के लिए किया जाता है, अनाज, आदि। बैग का आकार के अनुसार बदलता रहता है भेड़ या बकरी का आकार। मेमने से तैयार बैग और बच्चे का उपयोग गद्दी द्वारा गहने रखने के लिए किया जाता

है देवियों। कभी-कभी छोटे बैग का भी इस्तेमाल किया जाता है धन रखो। थो बिक थोबी, बकरी के बालों से बना कालीन बहुत खुरदरा होता है बनावट में लेकिन बहुत टिकाऊ । इसके आयाम उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

निष्कर्ष

हस्तशिल्प और ऊनी के वस्त्र से बनाया जाते हैं। अपनी निजी जरूरतों को पूरा करते हैं। ऊनी हैं आम तौर पर बहुत भारी और साथ ही स्थानीय से मिलने के लिए उबड़-खाबड़ मौसम की जरूरत पूरी होती है इतना कोई भी लोकप्रियकरण नहीं है। जो कि उत्पाद करके और बुनकर समुदाय के लोग बेचने की कोशिश भी करते हैं उनके उत्पादों को उचित मूल्य नहीं मिलता है। इस प्रकार वे स्थानीय बाजार पर ही निर्भर रहना पड़ता है। के अतिरिकत समुदाय के और उनकी बाहरी दुनिया के बारे में बहुत कम जानकारी होती है। इसलिए भी इनके मूल्यवर्धन की अत्यधिक आवश्यकता है। जातीय उत्पादों और लोकप्रियता को जारी रखने के लिए मदद करतेहैं और यह परंपरा आधार पर समुदाय समाज की आधुनिक समाज के साथ जोड़ने की कोशिश करते है तथा यह समाज की परम्परिक स्थित के बारे मैं इसे शोध में आधुनिक समाज के साथ जोड़ने कोशिश की गया है इसे शोध में

समुदाय सामज के प्राचीन पहनावा और गहने का नीचे दृश्य और चित्र का नीचे वर्णन किया गया है।

1 पोशक का चित्र

2 गोज्रो का चित्र

3 डोरू का चित्र

4 चिड़ि का चित्र

5 पपायल का चित्र

6 कागना का चित्र

7 गार्डी का चित्र

8 लुआंचारी का चित्र

9 चरखा का चित्र

10 बोना का चित्र

11 मोनार का चित्र

13 लुंचा का चित्र

13 रानी हार का चित्र

14 चाक का चित्र

15 फुलिया का चित्र

16 बालू का चित्र

17 थालचो का चित्र

18 खलरीक का चित्र

19 चादर का चित्र

20 चोक का चित्र

21 सोनारि हार का चित्र

22 टेका का चित्र

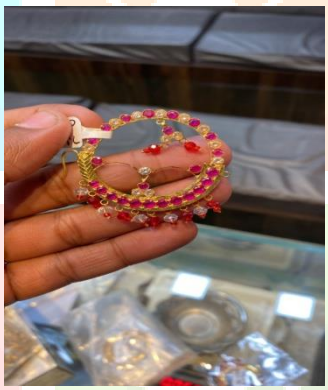

23 बालू का चित्र

24 शाल का चित्र

संदर्भ

1 बालोखरा जग मोहन, द वंडरलैंड हिमाचल प्रदेश: भूगोल का सर्वेक्षण, लोग, इतिहास, प्रशासनिक राज्य का इतिहास, कला और वास्तुकला, संस्कृति और अर्थव्यवस्था, तीसरा संस्करण, (एचजी प्रकाशन, नई दिल्ली), 1998।

2 www.हिमाचलवेब.कॉम

,हिमाचल प्रदेश की जनजाति गद्दी देव परम्परा और. (२०१२). शिमला: हिमाचल की कलाएं एव संस्कृति.

अमर के गुप्ता. (2001). हिमाचल प्रदेश समान्या ज्ञान . शिमला: हिमाचल प्रदेश की कला और संस्कृति.

अमर सिंह. (2007). गद्दी लोक संस्कृति एवं कलाएं,शिमला : हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी.

अमर सिंह रणपंपतिया . (2005). गद्दी भरमौर की लोक संस्कृति एव कलाए. शिमला: हिमाचल की कला और संस्कृति और भाषा .

अमर सिंह रणपतिय . (2010). भारमोर की लोक संस्कृति एव कलाएं. शिमला : हिमाचल प्रदेश की कलाएं संस्कृति भाषा अकादमी.

आहूजा राम . (2002). भारत समाज . जयपुर: रावत .पब्लिकेशन.

आहूजा राम . (2001). समाजिक अनुसधान. जयपुर : रावत .पब्लिकेशन .

आहूजा, राम. (2003). समाजिक समास्याएं जयपुर : रावत .पब्लिकेशन . जयपुर : रावत .पब्लिकेशन .

गोतम शर्मा . (2012). पांगी भरमौर और संस्कृति. शिमला: ,हिमाचल कला संस्कृति भाश अकादमी शिमला.

तिवारी, डी. एन. ((1989)). वन वनवासी एवं पर्यावरण. इलाहाबाद,: शांति पब्लिकेंशंस, इलाहाबाद,.

हंस अशोक. (2015). ,हिमाचल प्रदेश की लोक विवाह परम्परा . हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी: संगरमॉल भवन किल एंड एस्टेट शिमला हिमाचल प्रदेश.